ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 Issue 11 February 2018

समकालीन कविता: एक अध्ययन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे
सह संपादक
डॉ. रामचंद्र ज्ञानोबा केदार

Scanned by CamScanner

६. समकालीन हिंदी कविता
प्रा.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे
५३–५६

७. सर्वेश्वर दयल सक्सेना की समकालीन हिंदी कविताओं में सामाजिकता
प्रा. डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव
५७–६२

८. समकालीन – हिंदी कविता में स्त्री–विमर्श
प्रा. डॉ. मोहन डमरे
६३–६९

९. समकालीन हिंदी कविता
डॉ. गायकवाड मुकुंद
७०–७३

१०. दलितों के दर्द का लेखा–जोखा व्यक्त करते समकालीन हिन्दी उपन्या
डॉ. हाशमबेग मिर्झा
७४–८०

११. आदिवासियों के मूल अधिकार प्राप्ति की संघर्ष गाथा : 'तीसरा रास्ता'
प्रा डॉ संजय नाईनवाड
८१–८६

१२. समकालीन कविता और उदय प्रकाश
प्रा. डॉ. भाऊसाहेब गळे
८७–९१

१३. समकालीन हिन्दी कहानी : दशा और दिशा
डॉ. राहुल शुक्ला और अरुण कुमार
९२–१०१

Scanned by CamScanner

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 53-56
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

समकालीन हिंदी कविता

प्रा.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

नई कविता के उपरानत कविता बडी तीव्रता से तुफानी दौर से गुजर रही है। अनेक आंदोलन कविता के क्षेत्र में हमारे सामने आऐ है। यथा नूतन कविता, समसामायिक कविता, अकविता, अभिनव कविता, सहज कविता, अस्वीकृत कविता आदि है। कविता जीवन की व्याख्या है। अत: वह जिन्दगी के तमाम अनुभव को अपने भीतर कविता समेटती रहती है।

समकालीन कविता अपने युग एवं परिवेश से रुबरु कराती है। इस कविता में हम अपने वर्तमान को देख सकते है। हमारी आशा–निराशा, आकांक्षा–अपेक्षा, राग–विराग, हर्ष–विषाद यह सब उसमे समाऐ रहता है। राजनीतिक अव्यवस्था उत्तरोत्तर कठिण होता जा रहा है। सामाजिक विकृतियाँ, खोखले सिध्दान्त सबको समकालीन कविता में समेटा गया है। समकालीन कविता का स्वर व्यंग्य एवं आक्रोश से भरा हुआ है। उसमे बौध्दिकता भी प्रचूर मात्रा में है। समकालीन कविता में चित्रित मानव जिन तनावों, विसंगतियों एवं कुण्ठाओं को लिए हुए जी रहा है। वह पूर्णत: यथार्थ है। इसे कविता में पहले की कविता की तुलना में सपाटबयानी अधिक हो गई है।

प्रा.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे : सहा.प्राध्यापक, हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर, ता.देगलूर जि.नांदेड

Scanned by CamScanner

समकालीन कविता उस मोहभंग को दर्शाती है। जो स्वतंत्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ था। आज हमें लगता है कि हम पूरी तरह ठगे हुऐ है। नेताओं के वादे खोखले साबित हुऐ है। सबके घर में रोशनी और खुशहाली का वादा किया गया था। पर यथार्थ में हम पूरे शहर में एक चिराग तक नहीं जला सके है।

कहां तो तय था चिरांगां हरेक घर के लिए।

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।।

– दुष्यंतकुमार

अकाल, बेरोजगारी, भुखमरी, जातिवाद, भाषावाद, धार्मिक संकीर्णता और साम्प्रदायिक दंगो ने हमारे आदर्श की पोल खोल दी है। समकालीन कवि इन सब पर अपनी बेबाक टिप्पणी करता हे। आजादी से उसका मोहभंग हो गया है। लीलाधर जंगूडी ने इन पंक्तियों से अभिव्यक्त किया है

सूचना विभाग के हर पोस्टर पर

खुशहाली है चारों ओर

कंगालों के पास आटा नहीं गाली है।

और जिसमें कोई नहीं खाना चाहता।

आजादी एक –ूटी थाली है।

–लीलाधर जंगूडी

समकालीन कवियोंने कुर्सी प्रेमी नेताओं पर अपना बेबाक मत रखा है। ये नेता जनता को लिखौना सम–ाते है और अपना साध्य सीधा करने के लिए हमारा उपयोग करते रहते है। दुष्यंतकुमारजीने निम्न पंक्तियों सें इसी और संकेत किया हैं।

जिस तरह चाहो बजाओ इस सभा में

हम नहीं है आदमी हम --ुन–ुने है।

– दुष्यंतकुमार

समकालीन कविता में जीवन की विभिन्न वास्तविकताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। यह जीवन की भयावह त्रासदी, क्रूरता और विसंगतिपूर्ण स्थितियों को

Scanned by CamScanner

सामने लाती है। राजनीतिक जडता ने अधिकांश लागों का मोहभंग कर दिया है। इसलिए धूमिलजी कहते है।

मैंने इंतजार किया

अब कोई बच्चा भूखा रहकर

स्कूल नहीं जायेगा

अब कोई छत

बारिश में नही टपकेगी।

– धूमिल

पर ये आकांक्षांए पूरी नहीं हो सकी तब रघुवीर सहाय भी अपने मोहभंग को इन शब्दों में प्रस्तुत करते है।

बीस साल धोखा दिया गया

वहीं फिर मु–ो कहा जायेगा विश्वास करने को

पूछेगा संसद में भोला भाला मन्त्री

मामला बताओ हम कार्यवाही करेंगे।।

– रघुवीर सहाय

सहज सरल भाषा में की गई इन अभिव्यक्तीयों से पाठक तिलमिला उठता है।

समकालीन कविता अपने देशकाल से पूरी तरह जुडी हुई है। चारों और फैली भयावह स्थितियों, भूखी नंगी जनता की परेशानियों एवं शासक की लापरवाही सब कुछ वह अपने काव्य में समेटता रहा है। वह कहता है कि दिल्ली की संसद में बहस चल रही है कि भूखी जनता को रोटी मिलनी चाहिए किन्तु कोरी बहस से किसी का भी पेट नहीं भरता है। हमें बस सब्र करने के लिए कह देते है।

भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ।

आजकल दिल्ली में जेरे बहस है ये मुद्दआ।।

–दुष्यंतकुमार

समकालीन कविता का क्षेत्र हमारे आस:पास का परिवेश है। समकालीन कविता

Scanned by CamScanner

में जो काल संसक्ति है उसका यह अभिप्राय है। समकालीन कविता समय की गति के साथ यथासंभव चलना है। इस कविता ने यही किया है। स्वयंम को समय के साथ बदला है। आज के कवि आम आदमी के परिवेश एवं मानसिकता को कविता में अभिव्यक्त कर रहे है।

इन कवियों में प्रमुख है। धूमिल, दुष्यंतकुमार, रघुवीर सहाय, कुंवर नारायण, लीलाधर जंगूडी, चन्द्रकांत देवताले, बलदेव वंशी, श्याम विमल, वेणुगोपाल आदि कवि है। ये कवि समय के प्रवाह को पकडने का प्रयास करते हुऐ आम आदमी की स्थितीयों एवं परिस्थितीयों को अपनी कविता में बखूबी अभिव्यक्त करने में सकल रहे है।

संदर्भ ग्रंथसूची –

१) दुष्यंतकुमार – सूर्य का स्वागत, साये में धूप।
२) रघुवीर सहाय– सीढियों पर धूप में, लोग भूल गऐ है।
३) धुमिल –संसद से सडक तक।
४) लीलाधर – नाटक जारी है।
५) चंद्रकान्त देवताले –दीवारों पर खून से।

Scanned by CamScanner

UGC APPROVED RESEARCH JOURNALS

THEMATICS

A PEER-REVIEWED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF ENGLISH STUDIES

ISSN 0975-8313 | UGC APPROVED JOURNAL NO. 64364

RNI REGISTRATION NO. MAHENG/2010/32825

SAHITYA ANAND

AN INTER-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

ISSN 2320-5075 | UGC APPROVED JOURNAL NO. 64372

RNI REGISTRATION NO. MAHMUL/2013/49894

SOCIAL SCIENCE REPORTER

A PEER-REVIEWED INTER-DISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

ISSN 2231-0789 | UGC APPROVED JOURNAL NO. 64386

RNI REGISTRATION NO. MAHMUL/2011/51567

INDIAN LITERATURE AND CULTURE TODAY

A PEER-REVIEWED INTER-DISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-3721 | UGC APPROVED JOURNAL NO. 64362

RNI REGISTRATION NO. MAHMUL/2014/57246

BULLETIN OF INDIAN SOCIETY AND CULTURE

A PEER-REVIEWED INTER-DISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-3748 | UGC APPROVED JOURNAL NO. 64191

RNI REGISTRATION NO. MAHMUL/2014/57148

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO. 64395

RNI REGISTRATION NO. MAHMUL/2013/49893

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE
Sunil Terraces, Block No. 14 A,
Besides Central ST Bus Stand,
Latur-413512. Maharashtra, India.
Mobile: +91 9422 467 462/ +91 7058 462 462
Email: thematicsjournals@gmail.com

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
www.vishwabharati.in

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE
www.vishwabharati.in

ISSN 2320-6263

ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

Scanned by CamScanner